

Padma Shri



DR. NARENDRA PRASAD MISRA (POSTHUMOUS)

Late Dr. Narendra Prasad Misra served as the Dean, the Head of Department of Medicine and a Professor at Gandhi Medical College, Bhopal.

2. Born on 10th October 1932, Dr. Misra passed his MRCP exam in 1967 and was elevated as an FRCP in 1973 at a young age of 39 years, which speaks volumes about his academic brilliance. He was embellished with innumerable medals and awards for excellence in his field. He topped the university for his MBBS degree. During his undergraduate course in Medicine, he received certificates of honor in virtually all the subjects, including a distinction in Medicine.

3. In the UK, Dr. Misra trained as a Commonwealth Scholar at the University of London, specializing in gastroenterology, cardiology, chest diseases, neurology and advanced medicine at the Royal Post Graduate Medical School (Hammersmith Hospital). He also underwent training at the National Institute of Health in Washington, USA. In America, he gained valuable experience in the disciplines of cardiology, nephrology and nuclear medicine, besides Internal Medicine, while undergoing training at several reputed medical institutions, as a Senior Visiting Professor designated by the World Health Organization. In addition, he was a Fellow of the International College of Chest Physicians; the US International College of Angiology; the All India Institute of Diabetes; the National College of Chest Physicians of India, etc., amongst others.

4. Dr. Misra retired as Dean, Gandhi Medical College, Bhopal and was appointed as the chief investigator for the ICMR project associated with the Bhopal Gas Disaster. He later successfully presented the Bhopal Gas Episode in the District Court of New York where the case was being heard, which highlighted his hitherto unknown legal prowess as well. He keenly attended and presented papers at many international conferences in the USA and UK, besides South-East Asia, Germany, France, the Netherlands, Malaysia, Singapore, Mauritius, the UAE, Australia and South Africa etc. He was an eminent physician with an uncanny clinical acumen that helped him develop his phenomenal and well-known diagnostic skills. He is revered as a generous and gifted teacher who possessed an untiring devotion to the medical profession, which inspired him to serve mankind till his very last breath.

5. Dr. Misra published over 200 research papers, at least half of which were presented at various international and national conferences. He is the author of the book, Progress in Cardiology; he was the Sectional editor of the A.P.I. Textbook of Medicine and the author of The Technical Bulletin of Malaria. He exhibited his medical and administrative acumen in mobilizing resources — both human and material, during the Bhopal Gas Disaster, distributing medicines to over 1,73,000 victims and felicitating the hospitalization of over 10,700 patients in a hospital with a bed strength of only 800 beds. This fact was reported in the Journal of Medical Association (JAMA) in an editorial on 12th April 1985 as a "Heroic Effort".

6. Dr. Misra has received various recognitions & honours including Fellowship of the National Academy of Medical Sciences of India in 1986; Dr. BC Roy National Award in Medicine in 1992 by Medical Council of India; Gifted Teacher Award in 1995 by the Association of Physicians of India. Decorations and acclaims have followed him like life- companions which include several awards like the Sarahbhai, the Warner and the Torrent awards.

7. Dr. Misra passed away on 5th September, 2021.

पद्म श्री



डॉ. नरेन्द्र प्रसाद मिश्रा (मरणोपरांत)

डॉ. नरेन्द्र प्रसाद मिश्रा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, भोपाल के डीन, चिकित्सा विभाग के विभागाध्यक्ष और प्रोफेसर थे।

2. 10 अक्टूबर, 1932 को जन्में डॉ. मिश्रा ने 1967 में एमआरसीपी की परीक्षा उत्तीर्ण की और 1973 में 39 वर्ष की अल्प आयु में उनका दर्जा बढ़ाकर एफआरसीपी कर दिया गया, जो उनकी शैक्षिक मेधा का प्रमाण है। उन्हें अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए कई मेडल और पुरस्कार मिले। एमबीबीएस की परीक्षा में उन्होंने विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। चिकित्सा में अंतरस्नातक पाठ्यक्रम के दौरान उन्हें चिकित्सा में उत्कृष्टता सहित, लगभग सभी विषयों में प्रतिष्ठता प्रमाण—पत्र प्राप्त हुए।

3. यूनाइटेड किंगडम में, डॉ मिश्रा ने रॉयल पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल स्कूल (हैमरस्मिथ अस्पताल) में गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, कार्डियोलॉजी, वक्ष रोग, न्यूरोलॉजी और उन्नत चिकित्सा में विशेषज्ञता के साथ, लंदन विश्वविद्यालय से राष्ट्रमंडल स्कॉलर के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने अमेरिका के वाशिंगटन स्थित नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ में भी प्रशिक्षण लिया। अमेरिका में, उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा पद नामित एक वरिष्ठ विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में, कई प्रतिष्ठित चिकित्सा संस्थानों में प्रशिक्षण के दौरान, इंटरनल मेडिसिन के अलावा कार्डियोलॉजी, नेफ्रोलॉजी और न्यूक्लियर मेडिसिन के विषयों में बहुमूल्य अनुभव प्राप्त किया। इसके अलावा, वह अन्य संस्थानों के साथ-साथ, इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ चैस्ट फिजिशियन्स; यूएस इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ एंजियोलॉजी; अखिल भारतीय मधुमेह संस्थान; नेशनल कॉलेज ऑफ चैस्ट फिजिशियन्स ऑफ इंडिया आदि के फेलो थे।

4. डॉ. मिश्रा गांधी मेडिकल कॉलेज, भोपाल के डीन के पद से सेवानिवृत्त हुए और उन्हें भोपाल गैस त्रासदी से जुड़ी आईसीएमआर परियोजना का मुख्य अन्वेषक नियुक्त किया गया। बाद में, उन्होंने न्यूयॉर्क के जिला न्यायालय में, जहां मामले की सुनवाई हो रही थी, में भोपाल गैस प्रकरण को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया, जिससे उनका अब तक अज्ञात विधिक कौशल भी उजागर हुआ। उन्होंने दक्षिण-पूर्व एशिया, जर्मनी, फ्रांस, नीदरलैंड, मलेशिया, सिंगापुर, मॉरीशस, संयुक्त अरब अमीरात, ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका आदि के अलावा संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन में कई अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में सक्रिय भाग लिया और शोध—पत्र प्रस्तुत किए। वह अद्भुत नैदानिक कौशल वाले प्रख्यात चिकित्सक थे। उनका डाईग्नोस्टिक कौशल असाधारण और प्रसिद्ध था। वह एक उदार और प्रतिभाशाली शिक्षक के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिनका चिकित्सा पेशे के प्रति अपार समर्पण था, जिसने उन्हें अंतिम सांस तक मानव जाति की सेवा के लिए प्रेरित किया।

5. डॉ. मिश्रा ने 200 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए, जिनमें से कम से कम आधे शोध—पत्र विभिन्न अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय सम्मेलनों में प्रस्तुत किए गए। उन्होंने प्रोग्रेस इन कार्डियोलॉजी नामक पुस्तक लिखी; वह ए.पी.आई. टेक्स्टबुक ऑफ मेडिसिन के सेक्शनल संपादक, और टेक्निकल बुलेटिन ऑफ मलेरिया के लेखक हैं। उन्होंने भोपाल गैस त्रासदी के दौरान मानवीय और भौतिक दोनों प्रकार के संसाधनों को जुटाने में 1,73,000 से अधिक पीड़ितों को दवाएं वितरित की और केवल 800 बिस्तरों की क्षमता वाले अस्पताल में 10,700 से अधिक रोगियों को अस्पताल में भर्ती करके उनका उपचार कराया। जर्नल ऑफ मेडिकल एसोसिएशन (जामा) ने 12 अप्रैल, 1985 के संपादकीय में इस तथ्य को “अद्भुत कार्य” कहा था।

6. डॉ. मिश्रा को 1986 में भारतीय राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान अकादमी की फ़ैलोशिप; भारतीय चिकित्सा परिषद द्वारा 1992 में डॉ. बी. सी. रॉय राष्ट्रीय चिकित्सा पुरस्कार; एसोसिएशन ऑफ फिजिशियन्स ऑफ इंडिया द्वारा 1995 में गिफ्टेड टीचर अवार्ड सहित विभिन्न प्रशस्तियां और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें आजीवन सम्मान और प्रशंसाएं प्राप्त होती रहीं, जिनमें साराभाई, वार्नर और टोरेंट पुरस्कार जैसे कई पुरस्कार शामिल हैं।

7. डॉ. मिश्रा का 5 सितम्बर 2021 को देहावसान हो गया।